सीखे गए सबक़ | अज़ीम प्रेमजी स्कूलों से

पल्लवी चतुर्वेदी

पिछले डेढ़ साल के अभूतपूर्व अनुभवों में, जब दुनिया ने विभिन्न प्रकार की अनिश्चितताओं के लिए अभ्यस्त होना सीख लिया है, हमारे देश में स्कूली शिक्षा की निराशाजनक सच्चाई और भी संकटग्रस्त हो गई है। बच्चों को शिक्षा से जोड़े रखने के लिए मौजूदा शैक्षणिक संस्थानों के विस्तार में आने वाले अधिकांश स्कूलों द्वारा चलाई गईं ऑनलाइन कक्षाओं या अपनाए अन्य उपायों के बावजूद बच्चों के लिए सीखने के वास्तविक अवसर बहुत कम हो गए हैं। यह महामारी की स्थिति के कारण हुआ है जिसने मानव जाति के सामने कई सारी नई चुनौतियाँ पेश कर दीं, जिनमें से कई पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता थी क्योंकि उनका सम्बन्ध जीवन बचाने से था। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कई परिवारों, ख़ासकर समाज के आर्थिक रूप से कमज़ोर तबक़े के अधिकांश लोगों, के लिए बच्चों की शिक्षा प्राथमिकताओं की सूची में बहुत नीचे खिसक गई है।

अब जब टीकों के तेज़ी से हुए विकास और संकेन्द्रित टीकाकरण अभियान की बदौलत दुनिया *कोविड-19* महामारी के कारण उपजी अतिरिक्त विवशता और अव्यवस्था से उबर रही है, तो बच्चों की शिक्षा की उपेक्षा का हमें धीरे-धीरे एहसास हो रहा है। नतीजतन, शिक्षकों और शिक्षाविदों के बीच समान रूप से आगे की चुनौतियों के बारे में व्यापक चिन्ता है। उन्हें इस बात की चिन्ता है कि इतने लम्बे अन्तराल के बाद स्कूलों के फिर से खुलने पर बच्चों के सीखने में आई सम्भावित दरारों के सन्दर्भ में उन्हें किन-किन बातों से निपटना होगा।

सौभाग्य से, कुछ स्कूलों जैसे अज़ीम प्रेमजी स्कूलों में हर कोई स्कूलों के फिर से खुलने की घोषणा का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा है। महामारी के समय के अनुभव, जो भले ही कठोर और बेहद तकलीफ़देह थे, एक अप्रत्याशित समस्या का समाधान लेकर आए हैं, जो हमारी अगली कार्रवाइयाँ हैं। इनमें से कुछ कार्रवाइयों को आशा और विश्वास के साथ आज़माया गया है और ये छोटी भले ही हों लेकिन इनसे, प्रतिकूल परिस्थितियों और बाधाओं का सामना करने के बावजूद, शिक्षकों की शिक्षण देने की इच्छाशक्ति की आकर्षक कहानियाँ का पता चला है। बच्चों और उनके परिवारों की तत्काल ज़रूरतों की जानकारी से दिशा पाकर, साथ ही पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को भी ध्यान में रखते हुए, शिक्षकों ने नए तरीक़े खोजे उन पर लगातार विचार किया और स्कूल फिर से खुलने के लिए पाठ्यचर्या की योजना बनाई।

फ़ाउण्डेशन के प्रयास

राजस्थान, छत्तीसगढ़, कर्नाटक और उत्तराखण्ड के हमारे स्कूलों ने पिछले साल अप्रैल में लगे पहले लॉकडाउन के ठीक बाद अकादमिक और मानवीय, दोनों तरह के सहयोग के लिए अपने प्रयास शुरू कर दिए थे। लगातार तीन लॉकडाउन के दौरान भोजन और पोषण की सख़्त ज़रूरत सबसे तात्कालिक और अत्यावश्यक ज़रूरत के तौर पर उभरी, जिसकी तरफ़ न केवल सरकारों को, बल्कि हर उस इन्सान को ध्यान देना ज़रूरी था, जिसके पास दूसरों से अधिक साधन थे। एक महत्त्वपूर्ण नागरिक समाज संगठन के रूप में हमारी प्रतिक्रिया त्वरित और प्रभावी थी। विभिन्न राज्यों में हमारे ज़िला संस्थानों की टीमों के साथ-साथ हमारे स्कूल के शिक्षकों ने भी अपने विद्यार्थियों के परिवारों तक राशन और आवश्यक वस्तुएँ पहुँचाने के लिए तत्पर सहयोगियों की तरह काम किया।

इसके बाद ऑनलाइन मोड और वर्कशीटों के माध्यम से विद्यार्थियों के साथ निरन्तर शैक्षिक जुड़ाव स्थापित किया गया। पर घर से मदद न मिल पाने के कारण ये दोनों ही तरीक़े हमारे ग्रामीण और झुग्गियों में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए अप्रभावी साबित हुए। इन बच्चों को कुछ घण्टों के लिए भी स्मार्टफ़ोन उपलब्ध नहीं था (लेकिन जिन माता-पिता के पास स्मार्टफ़ोन था भी तो वे उसे अपने काम पर ले जाते थे और देर से घर वापस आते थे)। इसके अलावा, हमारे कई विद्यार्थियों के माता-पिता, दोनों काम पर जाते हैं और जहाँ माँ घर पर रुकती है वहाँ वह अपनी शिक्षा की कमी या कई घरेलू ज़िम्मेदारियों के कारण अपने बच्चे की मदद करने में असमर्थ थी। इसलिए, जैसे-जैसे जीवन थोड़ा सामान्य होने लगा गाँवों और क़स्बों के समुदायों में नियमित कक्षाएँ शुरू करने की योजना बनाई गई और उसे क्रियान्वित किया गया।

इन दौरों से यह स्पष्ट हो गया कि नियमित कक्षाएँ उन बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण थीं जिनका जीवन महामारी के कारण बदल गया था। कुछ उदाहरण अभी भी मेरी स्मृति में अंकित हैं, जिनका उल्लेख हमारे आस-पास की वास्तविकता की मिश्रित तस्वीर को देखने के लिए यहाँ प्रासंगिक है।

मेरे ज़ेहन में तीसरी कक्षा के लड़के बण्टू की छवि उभरती है, जब वह छोटे से क़स्बे के अपने एक कमरे के झोंपड़ीनुमा घर की रसोई में खाने के लिए कुछ ढूँढ़ रहा है और फिर अपनी रोटी ख़ुद बनाने का फ़ैसला करता है क्योंकि उसकी माँ काम करने जल्दी घर से निकल गई थी। उसकी इस छवि ने मेरी स्मृति के मेहराब में एक मोड़ बना दिया। इसके बाद मेरे दिमाग़ में आठवीं कक्षा की उत्साही छात्रा गायत्री की छवि उभरती है, जो घर के कामों के साथ-साथ स्कूल का काम भी कर रही है। उसके माता-पिता सुबह जल्दी ही अपने छोटे-से खेत में काम करने के लिए चले जाते हैं इसलिए वह अपने तीन छोटे भाई-बहनों की देखभाल कर रही है, जिनमें से एक तो अभी शैशवावस्था में है, और फिर भी पढ़ाई के लिए समय निकालने की कोशिश कर रही है। इसके अलावा इसी कक्षा में पढ़ने वाली जोशना की छवि उभरती है जो हमारी मोहल्ला कक्षाओं में नियमित रूप से आने के लिए जद्दोजहद कर रही है क्योंकि जानवरों की देखभाल और घरेलू काम करने की ज़िम्मेदारियों के कारण उसके पास अपनी पढ़ाई पर ध्यान देने के लिए समय और मानसिक ऊर्जा नहीं बचती। इसके बाद ज़ेहन में बच्चों के उन छोटे-छोटे समूहों की तस्वीर उभरती है जो किसी एक के घर के बड़े कमरों और बरामदों में आराम से बैठकर पढ़ाई कर रहे हैं। ऐसा समुदाय के सदस्यों की उदारता की बदौलत सम्भव था। फिर उन बच्चों की छवियाँ भी दिमाग़ में आती हैं जो कठोर गर्मी और उमस में छोटे, तंग कमरों में बैठे हुए अँग्रेज़ी की कविताएँ और गीत गा रहे हैं। और इन सबसे ऊपर है, दुबले-पतले और पीले-से दिखने वाले बच्चों की छवियाँ, जो उनके स्कूल लगने के समय से बहुत पहले ही गाँव की गलियों में घूम रहे हैं। मेरे दिमाग़ में स्कूलों से दूर हुए बच्चों की ये मुख्य छवियाँ हैं। इन सभी स्मृतियों में उल्लेख के बिना भी जो प्रमुख हैं वे हैं हमारे शिक्षक, जो तमाम बाधाओं के बावजूद बच्चों के साथ शैक्षिक जुड़ाव बनाने और उसे जारी रखने के काम का सबसे बड़ा सहारा और प्रेरक शक्ति रहे हैं।

यदि यह यात्रा हमारे बच्चों के लिए आसान नहीं रही है, तो यह हमारे शिक्षकों के लिए उससे कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण रही है। उनके सामने आई कठिनाइयाँ केवल भावनात्मक और शारीरिक नहीं थीं, जिसमें संक्रमित होने के अपने डर से मुक़ाबला और उसका जोखिम उठाना शामिल था। उन्हें मोहल्ला कक्षाओं के लिए उपयुक्त स्थानों को ढूँढ़ने या बच्चों के घरों में नियमित रूप से आने-जाने में आई शारीरिक असुविधा का सामना करना पड़ता था। उनकी ज़िम्मेदारियों में अन्य चुनौतियाँ और बढ़ गईं थीं जैसे असुविधाजनक स्थान, योजनाओं और स्थानों में बार-बार बदलाव और मौसम का प्रकोप। लेकिन इन सबसे अधिक बढ़कर था सीखने को सम्भव बनाने और बेहद प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उसे जारी रखने के लिए सर्वोत्तम तरीक़ों व कार्यनीतियों का पता लगाने का संघर्ष। कहने की ज़रूरत नहीं है कि इसमें योजना बनाने, चर्चाओं, संशोधनों और योजनाओं के क्रियान्वयन के कई दौर शामिल थे, जैसे ऑडियो-विज़ुअल साधनों का उपयोग, वर्कशीट देना, विद्यार्थियों को फ़ोन पर उनके कार्यों को करने में मदद करना, एक-एक बच्चे को रूबरू होकर जोड़ना या छोटे बहु-कक्षा, बहु-स्तरीय (एमजीएमएल) समूहों में जोड़ना, विभिन्न प्रकार के संसाधनों, कार्यों और विधियों (बातचीत, चर्चा और स्पष्टीकरण) का उपयोग सहयोग के रूप में करना और फिर कक्षा-वार समूहों का रूप देना।

भविष्य की योजनाएँ

अब जब हम इस यात्रा को पीछे मुड़कर देखते हैं, तो सबसे पहले हमें एहसास होता है कि कठिन समय में हमारे प्रयासों से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है। उदाहरण के लिए, पहले हमारे स्कूलों में वर्कशीट का उपयोग आम नहीं था, लेकिन अब हम कार्य-आधारित सीखने के अवसर पैदा करने के लिए नियमित रूप से वर्कशीटों का उपयोग कर रहे हैं। दूसरा, ऑनलाइन मोड, जो शुरू में हमारे सभी स्कूलों की सभी कक्षाओं के लिए उपयोग किया गया था, अब कुछ सफलता के साथ सिर्फ़ यादगीर (कर्नाटक) और धमतरी (छत्तीसगढ़) में प्री-प्राइमरी कक्षाओं के लिए उपयोग किया जा रहा है। इसी तरह, एमजीएमएल समूहों के साथ सार्थक रूप से जुड़ने की कार्यनीतियों के बारे में सोचने के लिए हमने कभी इतना मजबूर महसूस नहीं किया। लेकिन अब, हमारे शिक्षक बच्चों को जोड़ियों और छोटे समूहों में प्रभावी ढंग से काम कराने में ज़्यादा सक्षम हो गए हैं।

पाठ्यचर्या व सह-पाठ्यचर्या सम्बन्धी विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने और स्कूलों से बच्चों की लम्बी अनुपस्थिति के दौरान उन्हें सार्थक ढंग से व्यस्त रखने के लिए बाल साहित्य का उपयोग करने के शैक्षणिक लाभों के बारे में हम हमेशा से जानते थे लेकिन हम इसे इतने खुलकर और सार्थक तरीक़े से कभी भी उपयोग नहीं कर सके थे, जैसा हमने लॉकडाउन के दौरान किया। कुछ स्कूलों ने नवाचार भी किए, जैसे डायरी लेखन और चित्रकला कराना। इसके साथ ही, दिन की शुरुआत में नियमित रूप से बच्चों की पहली भाषा में और अँग्रेज़ी में कविता और गीतों का सामूहिक पाठ छोटे और बड़े, दोनों तरह के विद्यार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी अभ्यास था।

संक्षेप में, ग़ैर-स्कूली शिक्षण अवधियों में हमारे शिक्षकों द्वारा प्रयोग के तौर पर किए गए विभिन्न प्रयासों की बदौलत अब उन्हें भाषाएँ और अन्य विषय पढ़ाने के विभिन्न तरीक़ों और विधियों के बारे में अधिक जानकारी और समझ हासिल हो गई है। उम्मीद है कि हमारे स्कूलों में बहुविध शिक्षण बना रहेगा और सीखने के विभिन्न तरीक़ों के माध्यम से विद्यार्थियों को लाभ पहुँचाएगा।

आगे की राह

उम्मीद है कि इन कठिन हालात में प्राप्त हुई अन्तर्दृष्टियाँ सीखने को सुनिश्चित करने के शिक्षकों के साधनों का भण्डार बन जाएँगी। अब, चूँकि हमारे शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ अधिक प्रभावी अकादमिक जुड़ाव रखने की बेहतर समझ और कार्यनीतियों से लैस हैं, इसलिए वे स्कूलों के फिर से खुलने और उनके पहले की तरह चलने का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे हैं। कुछ स्कूलों में माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थी बारी-बारी से कक्षा की आधी क्षमता में स्कूल आने लगे हैं। शिक्षक ऐसे अवसरों का अधिक-से-अधिक लाभ उठाने का प्रयास कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप कुछ मामलों में, वे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए थोड़ी घबराहट भरी जल्दबाज़ी भी महसूस कर रहे हैं। इसके अलावा, उन विद्यार्थियों की चिन्ता, जिन्हें नियमित रूप से नहीं जोड़ा जा सका था, शिक्षकों को अत्यधिक ढाँचागत तरीक़ों पर वापस ले जा रही है — जिनकी ख़ासियत है सीमित सिखाना और विद्यार्थियों से त्वरित सीखने की अपेक्षा रखना।

बाक़ी स्कूलों में पाठ योजनाओं, समय सारणियों और कार्यनीतियों का लगातार पुनरीक्षण जारी है जो उनकी तात्कालिक वास्तविकता पर अधिक केन्द्रित है। स्कूलों को फिर से खोलने की योजना किसी बड़े पैमाने पर नहीं हो पा रही है, शायद इसलिए कि इस सम्बन्ध में राज्यों में काफ़ी अनिश्चितता बनी हुई है। हालाँकि, वर्तमान स्थिति के बावजूद जब हम पीछे देखेंगे तो महसूस करेंगे कि इस कठिन हालात ने अप्रत्याशित चुनौतियों के समाधान निकालने, उन्हें आज़माकर देखने और अपने शिक्षण व व्यवस्था-प्रबन्धन सम्बन्धी योजनाओं पर सोच-विचार कर उन्हें संशोधित करने के अभ्यासों को अपनाने में हमारी मदद की है। इन अभ्यासों की निरन्तरता को बनाए रखने और उन्हें मज़बूती देने के लिए ज़रूरी है कि स्कूली जीवन की सुविधाजनक एवं यांत्रिक रूप से निर्धारित दिनचर्या और प्रक्रियाओं, त्वरित परिणामों की उम्मीद और संकुचित व सीमित दायरों में काम करने के जाल से बचा जाए। इस स्थिति में स्कूल का नेतृत्व करने वालों की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। हम आशा करते हैं कि मुश्किल हालात में हासिल की गई इन सीखों को भुलाया नहीं जाएगा और वे सचेत स्कूली प्रक्रियाओं के एक भाग के रूप में और अधिक मज़बूती से स्थापित होंगी।

नोट : बच्चों की पहचान को सुरक्षित रखने के लिए उनके नाम बदल दिए गए हैं।

पल्लवी चतुर्वेदी 2012 से शिक्षकों के लिए अँग्रेज़ी भाषा शिक्षण और अँग्रेज़ी के शिक्षणशास्त्र के क्षेत्र में कार्यशालाओं और पाठ्यक्रमों की रूपरेखा बनाने और उनका संचालन करने में लगी हुई हैं। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ अपने नौ वर्षों के दौरान उन्होंने भोपाल, मध्य प्रदेश में सरकारी स्कूल के शिक्षकों और अज़ीम प्रेमजी स्कूलों के शिक्षकों के साथ काम किया है। भोपाल में रहते हुए, उन्होंने भाषा शिक्षकों और डीएलएड पाठ्यक्रम पढ़ाने वाले शिक्षक-अध्यापकों के लिए अध्ययन सामग्री तैयार करने में भी योगदान दिया। इससे पहले, वे केन्द्रीय विद्यालय संगठन के साथ अँग्रेज़ी के स्नातकोत्तर शिक्षक के रूप में काम करती थीं। वर्तमान में वे सिरोही, राजस्थान में रहती हैं। उनसे pallavi.chaturvedi@azimpremjifoundatio.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अनुज उपाध्याय